

# मानव का प्रकृति के विरुद्ध युद्ध और मानवता

गुरु प्रसाद राठौर,

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान (महर्षि स्कूल ऑफ साइंस एंड ह्यूमैनिटीज),  
महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सीतापुर रोड, लखनऊ

## शोध सारांश

सम्पूर्ण प्रकृति पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था और ज्ञानावस्था के जड़-चौतन्य से गठनशील-गठनपूर्ण प्रक्रिया द्वारा संचालित है। मानव स्वयं प्रकृति का एक अंग है यह कल्पनाशीलता व कर्मस्वतन्त्रता की इकाई होने के कारण मानव प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलित, अनियमित, अनियंत्रित शोषण कर रहा है। लाभोन्मादी व भोगोन्मादी सुविधा संग्रह के लिए आहार, आवास और विकास द्वारा जल, वायु, भूमि, वनस्पति, जीव-जगत प्रदूषित और शोषित होता जा रहा है। उत्पादन और विकास की महत्वाकांक्षा ने पूरी धरती को बीमार कर दिया है। मानव ने उपग्रह तकनीक द्वारा दूरगमन, दूरश्रवण व दूरदर्शन का निर्माण कर स्वयं को प्रकृति पर विजेता घोषित कर दिया है। वर्तमान सभ्यता की प्रकृतिविरोधी और मानवताविरोधी अपराध को आज भी रोका जा सकता है। शिक्षा-संस्कार द्वारा प्रकृति के नियम-नियंत्रण-संतुलन विधि के प्रति समझ विकसित करने एवं सुविधासंग्रहवादी-प्रतिस्पर्धावादी विकास के स्थान पर मानवतावादी प्रकृतिमय विकास की अवधारणा को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है यह जिससे सम्पूर्ण जगत का अस्तित्व सह-अस्तित्व विधि से सुरक्षित एवं प्रमुदित रह सके।

**मुख्यशब्द:** मानव, प्रकृति, प्रदूषण, पर्यावरण, मानवता, संतुलन, सह-अस्तित्व

## प्रस्तावना

मनुष्य सदियों से प्रकृति की गोद में फलता-फूलता रहा है। मानव और प्रकृति के बीच गहरा सम्बन्ध है। वे एक दूसरे के पूरक हैं। विश्व की सभी सभ्यताओं का विकास नदियों, पहाड़ों, वन-उपवन में ही हुआ है। सम्पूर्ण वसुधा प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है जिसमें सभी अवस्थाओं के जीवों के लिए वैभवित है। मत्स्य पुराण में धरती की महत्ता को बतलाते हुए कहा गया है कि “एक वृक्ष 100 पुत्रों के सामान है।” प्रकृति संरक्षण के बारे में अथर्ववेद में कहा गया है कि “हे धरती माँ जो कुछ भी मैं तुमसे लूँगा, वह उतना ही होगा जितना तू पुनः पैदा कर सके। तेरे मर्मस्थल पर या तेरी जीवनशक्ति पर कभी भी आघात नहीं करूँगा।” मनुष्य जब तक प्रकृति के

साथ सह-अस्तित्वमूलक विधि से रहा, सुखी और संपन्न रहा। किन्तु जैसे ही प्रकृति पर अतिक्रमण हुआ प्रकृति के विध्वंशकारी और विघटनकारी रूप सामने आने लगे। तापमान वृद्धि के कारण दुनिया भर में ग्लैशियर तेजी से पिघल रहे हैं। सूखा, बाढ़, सैलाब, तूफान आदि में वृद्धि हो रही है। (धर्मग्रंथों में पर्यावरण चेतना)

प्रकृति के पंचमहाभूत तत्वों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश से मानव शरीर की रचना हुई है; जो पर्यावरण का निर्माण करते हैं। दीर्घायु स्वास्थ्य हेतु इन तत्वों में संतुलन आवश्यक है। दुर्भाग्यवश हमारी भागीदारी प्रवृत्ति ने इस प्राकृतिक संतुलन को अस्थिर कर दिया है। संसाधनों का दोहन करते समय हम पूंजीलाभ और लालच में इतना उलझ जाते हैं कि पर्यावरण असंतुलन हो जाता है। प्रत्येक कार्य में मुनाफा

देखने वाली संस्कृति प्रत्येक क्षेत्र को निशाना बनाया। हमने विकास के नाम पर गाय, नदी और गाँव को नजरअंदाज कर दिया जिससे पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ गया। गाय का पर्यावरण संतुलन में विशेष योगदान है। गोबर आधारित खेती में जल की आवश्यकता कम पड़ती है। आज रसायनों के कारण भूजलस्तर में निरंतर गिरावट जारी है। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह प्रवृत्ति पर्यावरण असंतुलन के मूल कारणों में है। वनों की निर्मम कटाई पर रोक और वन्य जीवों के संरक्षण की अधिकाधिक आवश्यकता है। प्रकृति के स्वतन्त्र प्रवाह में कम से कम हस्तक्षेप होना चाहिए। प्राकृतिक व वन्य जीव –जंतुओं के अपने मकान नहीं होते। वे प्रकृति के गोद में ही पलते हैं। वे कल के लिए कुछ भी संचय नहीं करते। वे हरी – भरी वादियों, पेड़-पौधों में पलकर समरसता पूर्वक जीते हैं और वनस्पतियों को ही अपना आशियाना बनाते हैं। लेकिन मानव धन संचय के चक्कर में वन व वन्यजीवों को निरंतर हानि पहुंचा रहा है। (मानव और प्रकृति)

## शोध पद्धति एवं उद्देश्य

यह शोधपत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित तथा पद्धति वर्णात्मक है। इस शोधपत्र का मूल उद्देश्य मानव द्वारा प्रकृति के विरुद्ध किये गए कृत्यों का पता लगाना, प्रकृति के नियम – नियंत्रण – संतुलन विधि को जानना और लाभोन्मादी मानव के स्थान पर मानवीय मानव मूल्यों की स्थापना पर बल देना है।

## मानव के प्रकृति विरोधी कृत्य

मानव द्वारा जीवाश्म ईंधन के दुरुपयोग से ग्लोबल वार्मिंग – राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन (NOAA) के प्रशासक रिच स्पिनरैड के अनुसार 2023 सबसे गर्म वर्ष था।

यह मानव गतिविधि का परिणाम है। परिवहन और बिजली उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन के जलने, सीमेंट निर्माण, वनों की कटाई और कृषि के कारण उत्पन्न ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पृथ्वी को ढक लेता है वे सूर्य की गर्मी को रोक लेते हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग होती है। लगातार वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण विनाशकारी घटनाएं घटित हो रही हैं – आस्ट्रेलिया और अमेरिका में अब तक के सबसे विनाशकारी बुशफायर सीजन का अनुभव, अफ्रीका, मध्यपूर्व और एशिया के कुछ हिस्सों में टिड्डियों का झुण्ड, फसलों को नष्ट करना और अंटार्कटिका में एक हीटवेव जिसमें पहली बार तापमान को 20 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बढ़ा दिया। (15 Bigger Environmental Problems of 2024)

मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता अग्रहार नागराज का मत है की धरती के नीचे से जितना तेल निकाला जा रहा है उस अनुपात में कहीं अधिक गुना तेल धरती की सतह पर उत्पन्न हो सकता है। इससे तेल और कोयला निकालने की आवश्यकता शून्य हो सकती है। वनस्पति तेल जलने से जो धुआं होता है उसको पचाने का कार्य वनस्पति जगत में बना हुआ है, जबकि खनिज तेल और कोयले के धुएँ के अधिकांश भाग को बचाने में वनस्पति संसार असमर्थ रहता है। अब तक धरती को गंभीर क्षति पहुंचाई जा चुकी है। धरती के अंदर पाए जाने वाले जीवाश्म ईंधन कोयला, पेट्रोलियम, गैस धरती पर पड़ने वाले सूर्य ताप को अपने में अवशोषित करती है जिससे धरती पर ताप वृद्धि न होकर संतुलित स्थिति बनी रहे। लेकिन मानव की भोगवादी सुविधावादी संग्रह ने भूगर्भ में स्थित जीवाश्म ईंधन को दोहन के बजाय शोषण कर रहा है। प्रकृति प्रदत्त सौर ऊर्जा और प्रवाह शक्ति से विद्युतीकरण को बढ़ाया जा सकता है। वनों को बचाने हेतु लकड़ी की आवश्यकता को तब तक न्यूनतम किया जाए जब तक जंगल समृद्ध न हो जाए। (समाधानात्मक भौतिकवाद)

## विकसित और विकासशील देशों में भोजन की बर्बादी से उत्पन्न प्रदूषण

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की खाद्य अपशिष्ट सूचकांक रिपोर्ट 2024 के अनुसार 2022 में सभी महाद्वीपों के घरों में प्रतिदिन एक बिलियन से अधिक भोजन बर्बाद हुआ जबकि 783 मिलियन लोग भूख से प्रभावित हुए और मानवता के एक तिहाई लोगों को खाद्य सुरक्षा का सामना करना पड़ा। खाद्य अपशिष्ट वैश्विक अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रहा है और जलवायु परिवर्तन प्रकृति की हानि और प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है। 2022 में बर्बाद हुए कुल खाद्य पदार्थों में से 60% घरेलू स्तर पर हुआ जिसमें खाद्य सेवाएं 28% और खुदरा 12% के लिए जिम्मेदार थी। (खाद्य अपशिष्ट सूचकांक रिपोर्ट 2024) खाद्य अपशिष्ट और हानि सालाना ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। विकासशील देशों में 40% खाद्य पदार्थ की बर्बादी कटाई के बाद और प्रसंस्करण के स्तर पर होती है, जबकि विकसित देशों में 40% खाद्य पदार्थों के बर्बादी खुदरा और उपभोक्ता स्तर पर होती है। भोजन की बर्बादी पर्यावरण को प्रभावित करती है जो खाद्य पदार्थ बर्बाद हो जाते हैं उनमें 21% तक मीठे जल, 19% उर्वरक, 18% फसल भूमि और 21% लैंडफिल की मात्रा का उपयोग होता है। (Food waste effect)

### मानव निर्मित प्लास्टिक प्रदूषण

प्लास्टिक हमारे चारों ओर है। यह हमारे द्वारा पिए जाने वाले पानी, हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन और हमारे द्वारा सांस ले जाने वाली हवा में मौजूद है। पूरे जीवन चक्र में प्लास्टिक प्रदूषण से निबटना मानव और ग्रह के स्वास्थ्य की रक्षा और सतत विकास की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। दुनिया का अधिकांश प्लास्टिक कचरा 79: लैंडफिल या प्रकृति में जमा हो गया है।

प्लास्टिक प्रदूषण प्रकृति को नुकसान पहुंचाता है और महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों को नष्ट करता है। हर साल लाखों टन प्लास्टिक पर्यावरण में लीक हो जाता है इससे वन्यजीवों वनस्पतियों एवं 88% समुद्री प्रजातियों को प्रभावित किया है। प्लास्टिक प्रदूषण जलवायु संकट को बढ़ावा देता है। प्लास्टिक जीवाश्म ईंधन से बनता है। 2019 में प्लास्टिक उत्पादन और भस्मीकरण के परिणाम स्वरूप ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन, 189 कोयला बिजली संयंत्रों से होने वाले उत्सर्जन के बराबर था। प्लास्टिक मानव स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर रहा है। मानव फेफड़े, स्तन के दूध और रक्त में प्लास्टिक के कण पाए गए हैं। (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम-UNDP)

### वनों की कटाई का जलवायु वन्य जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव

कृषि, शहरीकरण और संसाधन निष्कर्षण जैसे उपयोगों के लिए वनों को साफ करना वनों की कटाई के रूप में जाना जाता है। वनों की कटाई का प्रत्यक्ष प्रभाव पारिस्थितिक असंतुलन एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाता है। वनों की कटाई से कार्बन अवशोषण में कमी जलवायु परिवर्तन में एक प्रमुख योगदानकर्ता है। कार्बन-डाई-ऑक्साइड एक ग्रीन हाउस गैस है और पेड़ इसे हवा से अवशोषित करके और अपने बायोमास में संग्रहीत करके इसके लिए एक सिंक के रूप में कार्य करते हैं। पेड़ हवा से कार्बन डाई ऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और जब उन्हें काटा जाता है तो इसे छोड़ देते हैं। इसलिए वन विनाश का वार्मिंग प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त पत्तियों से वाष्पीकरण और पौधों की जड़ों से वाष्पोत्सर्जन द्वारा पानी को वायुमंडल में पुनर्चक्रित किया जाता है, जंगलों के साफ होने पर कम हो जाती है, परिणाम स्वरूप बादल कवर और वर्षा में कमी जलवायु परिवर्तन के पहले से

ही भयानक परिणाम को और बढ़ा देती है। वनों की कटाई से असंख्य पौधों और जानवरों की प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा है, क्योंकि वन उनके लिए आवश्यक आवास प्रदान करते हैं। इसका परिणाम जनसंख्या के आकार में कमी या किसी प्रजाति का विलुप्त होना हो सकता है। (वन्य जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र)

## वायु प्रदूषण का मानव जीवन पर विनाशकारी प्रभाव

स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर (SOGA) रिपोर्ट के पांचवें संस्करण के अनुसार वर्ष 2021 में वायु प्रदूषण के कारण दुनिया भर में 8.01 मिलियन लोगों की मृत्यु हुई, जो मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा जोखिम कारक बन गया। कुल मौतों में से हृदय रोग, स्ट्रोक, मधुमेह, फेफड़ों के कैंसर और क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी (COPD) सहित गैर संचारी रोग वायु प्रदूषण से होने वाली लगभग 90% बीमारियों के लिए जिम्मेदार हैं। 2021 में, 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में 70 लाख से अधिक मौतें वायु प्रदूषण से जुड़ी थी। 58% मौतों का कारण परिवेश में P-M- 2.5, 38% मौतों का कारण घरेलू वायु प्रदूषण, 6% मौतों का कारण ओजोन है। (SOGA-2024)

वायु प्रदूषण किसी भी रासायनिक, भौतिक या जैविक कारक द्वारा घर के अंदर या बाहर के वातावरण का प्रदूषण है जो वायुमंडल के प्राकृतिक विशेषताओं को परिवर्तित करता है। घरेलू दहन उपकरण, मोटर वाहन, औद्योगिक सुविधाएं और जंगल की आग वायु प्रदूषण के सामान्य स्रोत हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय बनने वाले प्रमुख प्रदूषकों में पार्टिकुलेट मैटर, कार्बन मोनोऑक्साइड, ओजोन, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड शामिल हैं। बाहरी और भीतरी वायु प्रदूषण श्वसन और अन्य बीमारियों का कारण बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े दर्शाते

हैं कि विश्व की लगभग पूरी आबादी (99%) ऐसी हवा में सांस ले रही है जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा निर्देशों की सीमा से अधिक है तथा जिसमें प्रदूषकों का स्तर बहुत अधिक है, तथा निम्न और मध्यम आय वाले देश इससे सबसे अधिक प्रभावित हैं। (WHO रिपोर्ट 2024)

## महासागरीय प्रक्षेपीकरण एवं अम्लीकरण

सागर क्षेपण का अर्थ रसायनों, अपशिष्ट, गंदे पानी और मलबों को महासागरों में फेंक दिए जाने से है। सागर क्षेपण के कारणों में विषाक्त कचरे का निस्तारण, औद्योगिक रसायनों का निस्तारण, रेडियोधर्मी पदार्थों का निस्तारण, समुद्री खनन, औद्योगिक व घरेलू सीवेज, खतरनाक व हानिकारक कचरे का अवैध निस्तारण और तेल के रिसाव से फैलने वाला प्रदूषण है। इसके कारण समुद्री जीवों के श्वसन तंत्र और गिल्स को जाम कर देता है, जिससे उनके अंगों को पानी में मौजूद ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है। (पर्यावरण पत्रिका 2021) मानव द्वारा उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड (CO<sub>2</sub>) उत्सर्जन का लगभग एक चौथाई हिस्सा महासागरों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है, जिसके परिणाम स्वरूप पानी के PH में कमी आती है और अम्लीकरण हो जाता है, जिसका प्रभाव संपूर्ण खाद्य श्रृंखला पर पड़ता है। कैल्शियम कार्बोनेट के उपलब्धता को कम करता है, जिससे कोरल, मोलस्क और प्लवक जैसे जीवों के लिए अपने संरचनात्मक अखंडता बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। (यूरोपीय पर्यावरण एजेंसी रिपोर्ट 2024)

## आप्राकृतिक कृषि द्वारा उत्पन्न संकट

कृषि कार्य द्वारा आहार संबंधी समस्याएं समाधानित होती हैं। कृषि के साथ मानव ने भूमि संरक्षण, जल संरक्षण, बीज संरक्षण के साथ

ऋतुकाल विधियों को अपनाया। वातावरण में धरती, वायु, उर्वरक, जल और ऊष्मा यह प्रधान तत्व है। इन सब के संयोग से ही बीज अपने जैसे अनेक बीजों में और श्रेष्ठ बीज के रूप में होता है। खनिजीय क्षार और अम्ल तत्वों से जितनी भी खाद मानी जाती है, वह खाद न होकर धरती की सतह को उद्वेलित करने में और पौधे में पुष्टि के स्थान पर पिष्ट को संग्रह करने में अवश्य ही अस्थाई सहायक होता है। फसल की उपज में वृद्धि अवश्य होती है परंतु मानव शरीर के लिए प्रतिकूल भी होते देखा गया है। इसमें संतुलन पाने के लिए जैसे-जैसे कृषि क्रांति का विस्तार हुआ, गोपालन- पशुपालन संबंध की आवश्यकता, उर्वरक निर्माण कार्यों के लिए उन्नत विधियों को अपनाने की आवश्यकता अनुभव हुई। यद्यपि जैविक उर्वरक में भी अम्ल और क्षार का होना पाया जाता है। यह उसी अनुपात में होता है जिस अनुपात में फसल ग्रहण करता है। जबकि कृत्रिम विधि से खनिजजन्य अम्ल- क्षार विधि से जितने भी पदार्थ एवं द्रव्य हैं, यह उत्तेजनात्मक विधि से प्रभाव डालते हैं जो धरती को अम्लीय एवं क्षारीय बनता है। कृत्रिम उर्वरक (रासायनिक खाद) मानव परंपरा के लिए और धरती के लिए घातक है। अनुभवों के आधार पर यह आवश्यक है कि प्राकृतिक रूप में जो कुछ भी बीजानुसंगीय विधि से स्थापित बीजों का संरक्षण करना होता है, उसके लिए जैविक और वनस्पतिजन्य उर्वरक विधि को अपनाना ही उपाय है। इसके लिए कृषि के साथ पशुपालन भी आवश्यक है। (समाधानात्मक भौतिकवाद)

## विनाशकारी युद्धों से उत्पन्न प्रदूषण

युद्ध पर्यावरण पर कई तरह के विनाशकारी असर डालता है। युद्ध के दौरान इस्तेमाल होने वाले हथियारों और सैन्य सामग्रियों से पर्यावरण प्रदूषण होता है जो इस प्रकार हैं- लैंडमाइंस, क्लस्टर म्युनिशन और अन्य विस्फोटक अवशेषों से मिट्टी

और जल स्रोत दूषित हो सकते हैं। क्षतिग्रस्त जहाज, पनडुब्बियों और तेल अवसंरचना समुद्र को प्रदूषित करती हैं। रासायनिक हथियारों से होने वाला प्रदूषण जहर के तौर पर पर्यावरण में बना रहता है। युद्ध से वन्य जीवों के अवासों को नुकसान पहुंचता है, जिससे कई पौधों और जानवरों की प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा बना रहता है। दुनिया की सेनाएं वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के 5.5% के लिए जिम्मेदार हैं। रूस और यूक्रेन के बीच हो रहे विनाशकारी युद्ध का दुष्प्रभाव भविष्य में देखने को मिलेगा। (संघर्ष और पर्यावरण)

## मानव द्वारा अंतरिक्ष में प्रदूषण

यूरोपीय स्पेस एजेंसी(ESA) अंतरिक्ष पर्यावरण रिपोर्ट 2024 में बताया गया है कि पृथ्वी का कक्षीय पर्यावरण एक सीमित संसाधन है। 2023 में किसी भी पिछले वर्ष की तुलना में अधिक उपग्रह प्रक्षेपित किए गए हैं। कक्षा के अंतरिक्ष में मलबे की मात्रा तेजी से बढ़ रही है अंतरिक्ष निगरानी नेटवर्क द्वारा अब लगभग 35000 वस्तुओं पर नजर रखी जा रही है, इनमें से लगभग 9100 सक्रिय पेलोड हैं जबकि अन्य 26000 मलबे के टुकड़े हैं जिसका आकार 10 सेंटीमीटर से बड़ा है। 1 सेंटीमीटर से बड़े आकार के अंतरिक्ष मलबे की वास्तविक संख्या एक मिलियन से अधिक है जो विनाशकारी क्षति का कारण बनने में सक्षम है। अंतरिक्ष प्रदूषण से निपटने हेतु विभिन्न देशों द्वारा अनेकानेक अभियान चलाए जा रहे हैं जिनमें अमेरिका की सौरपाल परियोजना, नीदरलैंड की आई० डॉड परियोजना, कनाडा का गोसमर कक्षा निम्नीकरण उपकरण परियोजना, टेथल प्रणालियां ,विद्युत चुंबकीय पाल, सौरसकेंद्रक, पृथ्वी की कक्षा में लेजर आदि का प्रयोग किया जा रहा है। (ESA Space Environment Report 2024)

## ई- कबाड़ में वृद्धि

उपयोगिता पूरी कर चुके कंप्यूटर और मोबाइल फोन जैसे इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों से पैदा होने वाले कचरे को ई- कबाड़ कहते हैं। वर्ष 2019 में विश्व भर में रिकॉर्ड 53.6 मिलियन तक ई-कबाड़ पैदा हुआ इसमें से सिर्फ 17.4% ई-कचरा की री-साइकलिंग की गई। भारत में मात्र पांच प्रतिशत ई-कचरा का औपचारिक रीसाइकलिंग केन्द्रों के जरिए प्रसंस्करण किया जाता है, बाकी ई-कबाड़ का निस्तारण अनौपचारिक क्षेत्र के हवाले है। इस क्षेत्र में पर्यावरण और सुरक्षा से जुड़े मानदंडों का पालन बहुत कम किया जाता है। (भारत सरकार (2016) ई- वेस्ट प्रबंधन नियम)

## मानव पर्यटन द्वारा प्रदूषण

पर्यटन दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। पूरे विश्व में जितने भी पर्यटन स्थल प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण थे, वहां पर भी मानव समूहों द्वारा प्रदूषण फैलाया जा रहा है। झील, समुद्र तट, घाटी, अभ्यारण, जंगल, रेगिस्तान, पहाड़ों, चोटियों, गुफाओं आदि प्रत्येक क्षेत्रों तक आने-जाने के रास्ते व यातायात के साधनों ने प्रकृति के रंग को बेरंग कर दिया है। पर्यटन के चरम सीजन के दौरान भूमध्यसागरीय क्षेत्र में समुद्री कूड़े में 40% तक की वृद्धि पाई गई (पर्यटन की प्लास्टिक प्रदूषण समस्या) पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव तब होते हैं जब आगंतुकों के उपयोग का स्तर पर्यावरण की स्वीकार सीमा के भीतर इस प्रयोग से निपटने की क्षमता से अधिक होता है। अनियंत्रित पारंपरिक पर्यटन दुनिया भर के कई प्राकृतिक क्षेत्र के लिए संभावित खतरे पैदा करता है, यह किसी क्षेत्र पर भारी दबाव डाल सकता है और मिट्टी के कटाव, प्रदूषण में वृद्धि, समुद्र में निर्वहन, प्राकृतिक आवास की हानि, लुप्तप्राय प्रजातियों पर दबाव में वृद्धि और जंगल

की आग के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि जैसे प्रभाव को जन्म दे सकता है। यह अक्सर जल संसाधनों पर दबाव डालता है और यह स्थानीय आबादी को महत्वपूर्ण संसाधनों के उपयोग के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए मजबूर कर सकता है। यूरोपीय आलप्स में पर्यटन 100 मिलियन आगंतुकों से पार हो गया है। भारतीय हिमालय में प्रतिवर्ष 250000 से अधिक तीर्थ यात्री, 25000 ट्रैक्टर्स और 75 पर्वतारोहण अभियान गंगोत्री ग्लेशियर पर चढ़ते हैं। (पर्यटन के पर्यावरणीय प्रभाव)

## प्रकृतिमय मानवता

मनाकार को साकार करने वाला प्राणी मनुष्य होता है, जिसमें मानवता की पोषक दृष्टि, गुण व विषय संपन्न इकाई होने के कारण मानव कहलाता है। मानव में मानवीयता तब प्रमाणित होती है, जब उसमें मानवीय दृष्टि- न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य के निर्णयात्मक क्षमता व क्रियाशीलता हो, मानवीय स्वभाव- धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा हो, साथ ही दयापूर्ण कार्यों, मानव संबंधों, नैसर्गिक संबंधों, उनमें निहित मूल्य की पहचान व निर्वाह रूपी व्यवहार क्रिया एवं आचरण हो। ( परिभाषा संहिता ) पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रकृतिमय मानवता पर कहते हैं कि "प्रकृति की संपदा की मर्यादा की चिंता ना भी करें तो कम से कम इतना तो हमें मनाना पड़ेगा कि प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं के बीच परस्परालंबी संबंध हैं। एक दूसरे के सहारे खड़ी तीन लकड़ियों में से यदि हम एक की स्थिति में परिवर्तन कर दें तो शेष अपने आप गिर जाएंगी। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन की पद्धति इस सामंजस्य को बड़ी तेजी से बिगड़ती जा रही है। परिणामतः जहां एक और हम नई-नई इच्छाओं की पूर्ति के लिए नए-नए साधन ढूंढ रहे हैं वहीं दूसरी ओर हम संपूर्ण सभ्यता और

मानवता को समाप्त करने के लिए नए-नए प्रश्न पैदा करते जा रहे हैं।” ( एकात्म मानववाद )

प्रकृति और मनुष्य के सह-अस्तित्व संबंधों पर पंडित दीनदयाल कहते हैं कि हम प्रकृति से उतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरा कर ले। पेड़ से फल लेने में उसकी हानि नहीं होती, लाभ होता है। परंतु भूमि से अधिक फसल लेने, लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं, जिसमें कुछ दिनों के बाद उसकी उत्पादन-शक्ति ही समाप्त हो जाती है। आज अमेरिका में लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण ऊसर हो चुकी है। कारखाने मशीन आदि के लिए क्षय निधि की व्यवस्था करता है। परंतु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी क्षय निधि की चिंता ना करें, यह कैसे हो सकता है? हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अमर्यादित उपभोग नहीं, संयमित उपभोग होना चाहिए। सोद्देश्य, सुखी विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है, वह अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए। प्रकृति के सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किंतु जब हम यह समझ कर कि प्रकृति ने मनुष्य को केवल उपभोग प्रवण प्राणी बनाया है, उसके अधाधुंध उपभोग के लिए ही अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें तो यह ठीक नहीं होगा। इंजन को चलाने के लिए हमारा प्रयत्न तो यही रहता है कि कम से कम ईंधन से अधिकाधिक मात्रा में शक्ति पैदा हो। यह बचत का दृष्टिकोण है। मानव जीवन के उद्देश्य का विचार करके हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह न्यूनतम ईंधन से अधिकतम गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सके, यह अर्थव्यवस्था मानवीय होगी। यह मानव के एक पहलू का विचार न कर, उसके पूर्ण-जीवन का तथा अंतिम उद्देश्य का विचार करेगी। यह संहारात्मक ना होकर सृजनात्मक होगी। यह प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। शोषण नहीं दोहन हमारा आधार

होना चाहिए या प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। प्रकृति का स्तन्य हमारे लिए जीवनदायी हो, ऐसी ही व्यवस्था करनी चाहिए। ( एकात्म मानववाद )

## निष्कर्ष

संपूर्ण मानव जगत इस प्रकृति का अभिन्न हिस्सा है जिसमें प्रत्येक अवस्था में रहने वाले जड़ – चैतन्य की भांति मानव को भी अपनी भूमिका उसके स्वाभाविक मानवीय गुण, धर्म और स्वभाव पर आधारित होना चाहिए। यंत्रों, उपकरणों के माध्यम से हम धरती में गड्ढा कर सकते हैं, पहाड़ को मैदान बना सकते हैं, समुद्र तल पर हम संचार स्थापित कर सकते हैं, किंतु प्रकृति पर ना तो नियंत्रण पा सकते हैं ना ही विजय। मानव का प्रकृति के साथ सह- अस्तित्व पूर्ण स्वीकार्यता ही समाधान है। मानव ने पदार्थावस्था सहज वस्तुओं के उपयोग विधि से संपूर्ण यंत्रों को प्राप्त कर लिया है। यह यंत्र ना तो पदार्थावस्था के और ना ही प्राणावस्था जीवों के लिए सहायक है। मानव ने आवश्यकतावश सुविधावादी तत्वों आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरगमन व दूरदर्शन का उपयोग किया। औद्योगिक व तकनीकी विकास ने प्राकृतिक संपदाओं के द्वारा वर्तमान में विकास की उच्चतम सुविधा हासिल कर चुका है। अतः अब संपूर्ण विश्व संस्थाएं व सरकारें सचेत होकर धरती के पोषण हेतु दीर्घकालिक क्रियाशील योजनाएं बनाकर धरती का श्रृंगार करें जिससे सर्वे भवंतु सुखिनःके मानवतावादी प्रकृतिमय धारणा पुनः पल्लवित हो सके, साथ ही संपूर्ण जीव-जगत, जल-वायु, शुद्ध-सिद्ध तथा पवित्र हो सके।

## संदर्भ सूची

1. प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों में पर्यावरण चेतना : एक ऐतिहासिक अध्ययन, [https:// www- researchgate-net](https://www-researchgate-net)

2. मानव और प्रकृति, <https://youtu-be/TYDPVc6PkAE>
3. नागराज अग्रहार: समाधानात्मक भौतिकवाद, जीवन विद्या संस्थान अमरकंटक, 2009
4. RobinsonDeena, <https://earth-org/the-biggest-environmental-problems-of-our-lifetime/>
5. UNEP:Food Waste Index Report -2024] [https:// www-Inep-org/news-and-storige/press-rele-ase/world-squanders-over-1-billion-meals-day-un-report](https://www-Inep-org/news-and-storige/press-rele-ase/world-squanders-over-1-billion-meals-day-un-report)
6. <https://-UNDP-org/chemicals-waste/plastic-pollution>
7. <https://www.carbonclick.com/news-views/deforestations-impact-on-the-climate-wildlife-and-ecosystems>.
8. <https://stateofglobalair-org/resources/report/state-global/-air-report-2024>
9. <https://www-who-int/health-topics/air-pollution#tab=tab-1>
10. Chaturvedi Dr-Anup: सागर क्षेपण: कारण, प्रभाव और समाधान, पर्यावरण पत्रिका अंक 70] वर्ष 2021] पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली
11. [https:// ceobs-org/how-does-war-damage-the-environment](https://ceobs-org/how-does-war-damage-the-environment)
12. ESA Space Environment Report 2024] <https://www-esa-int>
13. Environmental Impact of tourism, <https://www-gdrc-org/uem/eco-tour/environment/one-html>
14. योजना : स्वास्थ्य एवं पर्यावरण, अंक संख्या -06] वर्ष 2021